जलवायु परिवर्तन को समझने में मददगार खेलकूद

पिछले कुछ दशकों में हुए जलवायु परिवर्तन और पेड़-पौधों पर इसके असर को समझने के लिए एक सर्वथा नया स्रोत सामने आया है – खुले में होने वाले खेलकूद के वीडियो।

पारिस्थितिकी विज्ञानी और साइकिल रेस प्रेमी पीटर डी. फ्रेने 'टूर्स ऑफ फ्लैंडर्स' नामक साइकिल रेस के 1980 के दशक के वीडियो देख रहे थे। अचानक रेस ट्रैक के पीछे के नज़ारों ने उनका ध्यान खींचा। उन्होंने देखा कि रेस ट्रैक के पीछे के पेड़ों पर पत्तियाँ नहीं हैं। जबकि वर्तमान रेसों में ट्रैक के पीछे के पेड़ों पर पत्तियाँ दिखती थीं। रेस के इन वीडियो का उन्होंने जलवायु परिवर्तन और पेड़-पौधों पर होने वाले प्रभाव के बीच सम्बन्ध को समझने के लिए इस्तेमाल किया।

'टूर्स ऑफ फ्लैंडर्स' बेल्जियम की एक लोकप्रिय साइकिल रेस है। 260 कि.मी. लम्बी इस रेस की खास बात यह है कि यह हर साल अप्रैल में ही आयोजित होती है। यानी अध्ययन के लिए हर वर्ष का एक ही समय का डेटा आसानी-से प्राप्त किया जा सकता है। साथ ही, उन्हीं पेड़-पौधों का अलग-अलग कोणों से अवलोकन किया जा सकता है।

शोधकर्ताओं ने फ्लेमिश रेडियो एंड टेलीविज़न ब्रॉडकास्टिंग ऑर्गेनाइज़ेशन के अभिलेखागार से रेस के 200 घण्टे के वीडियो लिए। इन वीडियो से उन 46 पेड़ों और झाड़ियों को चिन्हित किया जिनका अलग-अलग कोणों से अवलोकन सम्भव था। इस तरह 525 चित्र निकाले। इन चित्रों के विश्लेषण में उन्होंने पाया कि 1980 के दशक में, अप्रैल माह के शुरुआत में किसी भी पेड़ या झाड़ी पर फूल नहीं आए थे। और लगभग 26 प्रतिशत पेड़-पौधों पर ही पत्तियाँ थीं। लेकिन साल 2006 के बाद, उन्हीं पेड़ों में से 46 प्रतिशत पर पत्तियाँ आ चुकी थीं और 67 प्रतिशत पर फूल आ गए थे। शोधकर्ताओं ने जब वहाँ के स्थानीय जलवायु परिवर्तन के डेटा को देखा तो पाया कि 1980 से अब तक औसत तापमान 1.5 डिग्री सेल्सियस बढ़ा है।

बढ़ते हुए तापमान के आँकड़े बताने या ग्राफ पर दर्शाने से बात वैज्ञानिकों की समझ में तो आ जाती है, मगर आम लोग, खासकर राजनेता, इसे इतनी गम्भीरता से नहीं देखते। इस तरह के अध्ययन आम लोगों को जलवायु परिवर्तन के प्रभाव समझाने में महत्वपूर्ण हो सकते हैं।

यह सम्पादित लेख स्रोत फीचर्स के अंक - जनवरी 2019 से साभार।